SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का इतिहास विषय से सम्बंधित जागरुकता का अध्ययन

जगदम्बा सिंह, पी.–एचडी., प्राचार्य
एलिट पब्लिक बीएड कॉलेज, पलामू, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
जगदम्बा सिंह, पी.–एचडी.
E-mail : kunwarjdsingh@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/06/2025
Revised on : 23/08/2025
Accepted on : 02/09/2025
Overall Similarity : 01% on 25/08/2025

शोध सार

शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तःचक्षु खुल जाते हैं। अनुसंधान नए सत्यों की खोज के द्वारा अज्ञानता के अंधकार को मिटा नई रोशनी दिखाता है। यह सामान्योक्ति है कि जो लोग अपने इतिहास को भुला देते हैं उन्हें अपने इतिहास की पुर्नावृति करनी पड़ती हैं। यह समस्त मानव का अनुभव है कि उसका भूत, वर्तमान से और वर्तमान, भविष्य से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। मानव की सभ्यता एक अवयवी उपज है जिसमें वर्तमान, भूतकाल की जड़ों पर पनपता है और भविष्य के लिए उसे आधार बनाता है। इतिहास यह बताता है कि मनुष्य अमीबा से आदमी बनने तक की यात्रा पूरी कर आदमी से इंसान और इंसान से बेहतर इंसान बनने के संघर्षरत् है। इतिहास हमारे सोचने–समझने की शक्ति को विकसित करता है और यह बताता है कि वर्तमान में हम क्या है, और भूतकाल में क्या थे, बिना इतिहास के ज्ञान के व्यक्ति अच्छा निर्णय नहीं कर पाता। शिक्षा पद्धति, धर्म का प्रचार प्रसार, रहन–सहन, भोजन, वस्त्र, कला और संस्कृति का ज्ञान मिलता है। उस समय रचा गया साहित्य आज भी इसका साक्षी है।

मुख्य शब्द

माध्यमिक, ग्रामीण, शहरी, विद्यार्थियों, इतिहास, जागरुकता.

प्रस्तावना

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है– बीती हुई घटनाओं और पुरूषों का कालक्रम के अनुसार वर्णन। इतिहास में हम महान् लोगों के बारे में पढ़ते हैं कि उन्होंने अपने शासनकाल में क्या–क्या कार्य किए। इसके अतिरिक्त

इतिहास यह भी बताता है कि इन लोगों ने खोज, युद्ध और उन्नति में अपना क्या–क्या योगदान दिया है।

इतिहास शब्द का प्रयोग विशेषतः दो अर्थों में किया जाता है, एक है प्राचीन अथवा विगत काल की घटनाएँ और दूसरा उन घटनाओं के विषय में धारणा। इस प्रकार इतिहास शब्द का अर्थ है– परम्परा से प्राप्त उपाख्यान समूह (जैसे की लोककथाएँ), वीरगाथा (महाभारत) या ऐतिहासिक साक्ष्य, इतिहास के अन्तर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते हैं उसमे अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखने वाली घटनाओं का काल क्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों में मानव की विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है।

इतिहास के दर्पण में झाँकते ही हमारा अपना प्रतिबिम्ब मुखर हो उठता है। इतिहास की रेखायें हमारी वास्तविकता का दर्शन कराती है और बताते है कि हम क्या थे, हम क्या होंगे, इतिहास के आधार पर हम उस बीज तत्व की खोज कर लेते हैं जिसमें हमारा भावी समाज निर्मित होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय शिक्षा का आरम्भ प्रकृति की गोद में मानवीय मूलभूत जिज्ञासा की शांति के लिए हुआ था। भारत में शिक्षा प्रणाली का प्रसार वैदिक युग से माना जाता है। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली के आधार पर छात्रों को ब्रह्मचर का पालन कर शिक्षा प्राप्त करने की पद्धति थी। वैदिक युग से लेकर अब तक शिक्षा का अभिप्राय ज्ञान के स्त्रोतों के रूप में होता रहा है और वह जीवन के विविध क्षेत्रों में हमारा मार्ग आलोकित करता रहा है।

अतीत के अध्ययन के आधार पर वर्तमान को समझा जाता है और भविष्य को उज्ज्वल बनाया जाता है। इसलिए विद्यालयी पाठ्यचर्या में इतिहास विषय का प्रमुख स्थान है। इतिहास के शिक्षण में पाठ्य–पुस्तकों का बहुत महत्व है, क्योंकि इतिहास भूतकाल से सम्बन्धित है तथा भूतकाल के विषय में सजीवता की अनुभूति को जागृति एवं विकसित करने में पाठ्य–पुस्तकें विशिष्ट भूमिका निभाती हैं

जागरूकता

जागरुकता से अभिप्राय व्यक्ति या समाज का अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों से अवगत होना है। जो तत्व व्यक्ति या समाज के विकास को प्रभावित करते हैं, उनसें वह कितना सचेत और सावधान है, इसका ज्ञान ही जागरुकता है। व्यक्ति या समाज का अपने समस्त क्षेत्रों में होने वाले सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तनों तथा उनके प्रभावों एवं उपायों से पूर्ण रूप से परिचित होना ही जागरुकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थान के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं का इतिहास विषय से संबंधित जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की इतिहास संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध अध्ययन का न्यादर्श

क्र.सं.	विद्यालयों के नाम शहरी क्षेत्र/ग्रामीण	विद्यार्थियों की संख्या		योग
		छात्र	छात्रा	
1.	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सिविल लाईन, करौली	25	25	50
2.	महाराजा बदन सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महू	25	25	50
3.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय, मंडी	25	25	50

परिसीमन

किसी भी शोध कार्य में किसी एक शोध समस्या के समग्र क्षेत्रों का विश्लेषण करना सम्भव नहीं है। अतः अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्न प्रकार से सीमाकंन किया है:

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल राजस्थान के करौली जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता ने शोध की प्रकृति को ध्यान में रखकर शोध विधि का चयन करने का प्रयास किया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा उपकरण के रूप में अप्रमापीकृत या अमानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित जागरुकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अनुसंधान परिणामों को समझने तथा क्रियान्वित करने के कार्य में भी सांख्यिकी का ज्ञान अति–आवश्यक है। प्रस्तुत शोध के परिणामों का विश्लेषण हेतु अनुसंधानकर्ता ने निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया–

प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन, टी टेस्ट।

आंकड़ों का विश्लेषण

राजस्थान के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का इतिहास विषय से संबंधित जागरूकता का अध्ययन करने हेतू ऐतिहासिक जागरूकता के विभिन्न स्तरों के आधार पर विश्लेषण किया गया छात्र छात्राओं की संख्या एवं प्रतिशत ज्ञात किया गया जिसमें विभिन्न स्तर का विश्लेषण इस प्रकार है अति जागरूकता का स्तर 1.33 प्रतिशत, उच्च जागरूकता का स्तर 13.33 प्रतिशत, औसत जागरूकता स्तर 65.33 प्रतिशत निम्न जागरूकता 16 प्रतिशत और अति निम्न जागरूकता 4 प्रतिशत पाया गया। इतिहास विषय से संबंधित उच्च जागरूकता रखने वाले शहरी छात्रों की संख्या शहरी छात्राओं की संख्या अधिक पाई गई वही औसत जागरूकता रखने वाले शहरी छात्राओं की संख्या अधिक पाई गई।

निष्कर्ष

1. इतिहास विषय से संबंधित उच्च शैक्षिक अंक उपलब्धि (सम्प्रत्यय) रखने वाले ग्रामीण छात्रों की संख्या अधिक पायी गयी, क्योंकि ग्रामीण छात्र शहरी चकाचौंध से दूर रहते हैं और उनका ध्यान अपने कार्य के प्रति ज्यादा होता है। वहीं निम्न शैक्षिक अंक उपलब्धि (सम्प्रत्यय) रखने वाली ग्रामीण छात्राओं की संख्या अधिक है, क्योंकि ग्रामीण छात्राओं में साधन–सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।
2. शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा इतिहास विषय से संबंधित शैक्षिक अंक उपलब्धि (सम्प्रत्यय) अधिक स्पष्ट पाये गये, क्योंकि शहरी विद्यार्थियों को ऐतिहासिक धरोहरों, स्थापत्य कला, मूर्ति कला को पर्यटन के माध्यम से प्रत्यक्षीकरण करने का अवसर प्राप्त होता है जिससे उनके ऐतिहासिक सम्प्रत्यय अधिक स्पष्ट होते हैं, वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों में इसका अभाव पाया जाता है।
3. छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा इतिहास विषय से संबंधित शैक्षिक अंक उपलब्धि (सम्प्रत्यय) अधिक स्पष्ट पाये गये, क्योंकि छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अध्ययन के प्रति ज्यादा लगाव होता है और वे एकाग्रचित्त होकर किसी कार्य को तलीनता से सीखते व करते हैं।
4. इतिहास विषय से संबंधित उच्च जागरूकता रखने वाले ग्रामीण छात्रों की संख्या अधिक पायी गयी, वहीं औसत एवं अति निम्न जागरूकता रखने वाली छात्राओं की संख्या अधिक पायी गयी।

5. इतिहास विषय से संबंधित उच्च जागरूकता रखने वाली शहरी छात्राओं की संख्या शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी, वहीं उच्च जागरूकता रखने वाले शहरी छात्रों की संख्या अधिक पायी गयी।
6. शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा इतिहास विषय से संबंधित जागरूकता अधिक पायी गयी, क्योंकि शहरी विद्यार्थियों को आधुनिकता के सभी साधन उपलब्ध होते हैं जिससे उनकी जागरूकता ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होती है
7. ग्रामीण छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा इतिहास विषय से संबंधित जागरूकता अधिक पायी गयी, क्योंकि ग्रामीण छात्राओं को छात्रों की अपेक्षा सीमित स्वतंत्रता प्राप्त होने के कारण उनकी अंदर हर चीज को गहराई से जानने में रूचि होती है, वहीं छात्रों में इसका अभाव पाया जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. बाशम, ए. एल. (2014) *अद्भुत भारत का इतिहास,* शिव लाल अग्रवाल कंपनी, आगरा, उ.प्र.।
2. वासुदेव, हरि (2010) *भारत और समकालीन विश्व–1,* राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, जयपुर।
3. भटनागर, आर. पी. (2014) *शिक्षा अनुसन्धान,* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ. 259–60।
4. चौबे, झारखंडे (2015) *इतिहास दर्शन,* विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी, उ.प्र.।
5. ग्रोवर, बी. एल. (2005) *आधुनिक भारत का इतिहास,* एस.चन्द एंड कंपनी, नई दिल्ली।
6. कोल, लोकेश (2007) *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली,* विकास पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।

****